- **हॉब्स राजतंत्र को श्रेष्ठ मानता है| कारण-**
    1. राजा और राज्य का व्यक्तित्व तथा सार्वजनिक हित एक होता है|
    2. राजतंत्र में शासन का स्थायित्व अपेक्षाकृत अधिक पाया जाता है|

नागरिक कानून पर हॉब्स के विचार-

- **हॉब्स के अनुसार कानून की परिभाषा** "वास्तविक कानून उस व्यक्ति का आदेश है, जिसे दूसरों को आदेश देने का अधिकार प्राप्त है|"
- थॉमस हॉब्स के अनुसार **संप्रभुता का आदेश ही नागरिक विधियां** हैं| **संप्रभु ही विधि का एकमात्र स्रोत और व्याख्याकार** है|
- हॉब्स ने **सकारात्मक कानून** की नींव रखी, अर्थात कानून राज्य शक्ति का आदेश है| इसे बेंथम व ऑस्टिन ने आगे बढ़ाया|
- संप्रभु कानून का निर्माता तो है, लेकिन स्वयं के संबंध में उन कानूनों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं है|
- हॉब्स के अनुसार **कानून का सार उसमें निहित शक्ति** है| शक्ति के बिना कानून अर्थहीन विडंबना मात्र रह जाता है|
- **थॉमस हॉब्स** "तलवार के बिना समझौते शक्तिहीन कोरे शब्द हैं|"
- संप्रभु को अधिक विधियों का निर्माण नहीं करना चाहिए, क्योंकि उन्हें लागू करना कठिन हो जाएगा साथ ही जनता के ह्रदय में विधियों के प्रति सम्मान में कमी आ जाती है|

- **हॉब्स विधियों को दो भागों में बांटता है-**
    1. **वितरणात्मक या निषेधात्मक-** इसमें नागरिकों को वैध-अवैध कार्यो के बारे में बतलाया जाता है|
    2. **अज्ञात्मक या दंडात्मक विधि-** इसमें राज्य के मंत्रियों को जनता के प्रति, अपराधानुसार क्या दंड विधान है, के बारे में बताया जाता है|

- **हॉब्स ने प्राकृतिक विधि व नागरिक विधि में अंतर बताया है-**
    1. **प्राकृतिक विधि-** यह विवेक का आदेश है, जिसके पीछे शक्ति नहीं होती है|
    2. **नागरिक विधि-** यह प्रभुसत्ता का आदेश है, तथा बलपूर्वक लागू किया जाता है|

राज्य और चर्च संबंधी हॉब्स के विचार-

- थॉमस हॉब्स मध्ययुगीन के **पांडित्यवाद या स्केलोस्टिसिज्म** का विरोधी था|
- थॉमस हॉब्स धर्म की उत्पत्ति के संबंध में कहता है कि "धर्म की उत्पत्ति अंतरात्मा या किसी अन्य कारण से नहीं हुई है, बल्कि भय और स्वार्थ के कारण से हुई है|"
- हॉब्स **राज्य को सर्वोच्च संस्था** मानता है, अन्य सभी संस्थाओं को राज्य का एक विभाग मानता है|
- **हुड के शब्दों में** "हॉब्स ने ऐसे राज्य का निर्माण किया है जो केवल सर्वोच्च सामाजिक शक्ति के रूप में नहीं, वह सर्वोच्च आर्थिक शक्ति के रूप में भी निरपेक्ष था|"
- हॉब्स चर्च को भी राज्य के अधीन करता है, जिस पर संप्रभु का पूर्ण अधिकार है|
- हॉब्स ने कहा है कि **"पोपशाही रोमन साम्राज्य का प्रेत है और उसकी कब्र पर बैठा है|"**
- हॉब्स ने रोमन कैथोलिक चर्च को '**अंधकार का राज्य' (The Kingdom Of Darkness)** कहा है|
- **थॉमस हॉब्स** का मानना था कि चर्च या किसी धार्मिक संस्था को छूट दे दी जाए तो, वह राज्य में अव्यवस्था व अराजकता फैला सकती है, शासक को पदच्युत कर सकती है|

- **चर्च और राज्य के संबंध में हॉब्स के निम्न विचार हैं-**
    1. धर्म के संबंध में सर्वोच्च अधिकारी संप्रभु है|
    2. आध्यात्मिक शासन जैसी कोई वस्तु नहीं है|
    3. चर्च का दर्जा अन्य निगमों की भांति है, उसके सारे अधिकार राज्याधीन हैं|
    4. धर्माधिकारी उपदेशक माने जा सकते हैं, शासक नहीं|
    5. चर्च जैसे धार्मिक समुदाय को राज्य के साथ सत्ता के लिए संघर्ष कभी नहीं करना चाहिए|
    6. धार्मिक बहिष्कार या चर्च की ओर से दिया जाने वाला दंड भी तभी दिया जा सकता है जब संप्रभु चर्च को इस हेतु अधिकृत करें|